① * Dr. Sangita Aher (Hindi)

* Book chapter

प्रवासी हिन्दी साहि

और

सुदर्शन प्रियदर्शिनी

① * Dr. Sangita (Hindi)

प्रो. प्रदीप श्रीधर

डॉ. शिखा श्रीधर

50

नागार्जुन के यात्री मन से उपजी संवेदनशील प्रवासी कविता

-प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव

हिन्दी साहित्य के बहुमुखे प्रतिभाशाली रचनाकारों में नागार्जुन एक जनप्रिय कवि, उपन्यासकार, विचारक, चिन्तक और कान्तिदर्शी व्यक्ति के रूप मे हमारे सम्मुख आते हैं। साहित्य-सृजन की लगन ने उन्हें कभी चैन से नहीं बैठने दिया। घुमक्कड़ी प्रवृत्ति तो उनकी रग-रग में बसी हुई थी। नागार्जुन के जीवन में अनेक यात्राएं अनेक स्तर पर अनेक अनुभव देकर जाती हैं। कवि आश्चर्यजनक रूप में अनेक स्थानों से प्रेरणाएं ग्रहण करते हैं।

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के प्रगतिशील धारा के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। संस्कृत, मैथिली, बंगला तथा हिन्दी में साहित्य सृजन कर अपनी विविधमुखी प्रतिभाशक्ति का परिचय उन्होंने दिया है। नागार्जुन का साहित्य आडम्बर और खोखलेपन का पर्दाफाश करने वाला यथार्थवादी परिस्थिति का जीवंत दर्शन है। नागार्जुन का जीवनानुभव अतयन्त व्यापक और अपनी परिस्थितियों की उपज था, और इसमें उनके प्रवासी साहित्यकार होने का बहुत बड़ा योगदान है।

कवि की सामाजिक अभिन्नता का सम्बन्ध उनकी यायावरी के कारण अधिकाधिक गहरा होता है। यह यात्राएं उनकी ज्ञान की खोज थी। बौद्ध धर्म, आर्य समाज, पालि तथा प्राकृत साहित्य का ज्ञान नागार्जुन ने प्रवास के दौरान ही प्राप्त किया है। विविध शहरों, ग्रामों और आदिवासी तथ पहाड़ी प्रदेशों का सफर नागार्जुन को प्रेरणामयी रहा है। हिमालय के कन्धों पर चढ़कर नदी का रूप देखकर उनके मन में कौतुहल जाग उठता है कि, नदी को माता कहते हैं। इस नदी को माता बनने से पहले हम बेटियाँ, बहनों और प्रेयसी के रूप में देख ले तो कैसा रहेगा? ऐसे अनेक सवाल कवि के मन में प्रवास काल में आते रहते थे। तिब्बत की यात्रा दौरान यह काव्य-पंक्तियाँ नदी-किनारे कवि ने की है-

''तुम बेटी यह बाप हिमालय
चिन्तित, पर चुपचाप हिमालय
प्रकृति नदी के चित्रित पट पर
अनुपम अद् भूत छाप हिमालय
जय हो सतल बहन तुम्हारी।''[1]

नागार्जुन का यात्री मन हमेशा उन्हें बुलाता रहा। कभी बनारस, कभी इलाहाबाद, कभी कलकत्ता तो कभी श्रीलंका उनकी घुमक्कड़ी निरन्तर चलती रही। इन यात्राओं से अनेकानेक जीवनानुभव ग्रहण करन सृजन की प्रेरणा वे ग्रहण करते रहे। उनकी यायावरी समाज से भिन्न नहीं थी। जन-समस्याएं, मानवीय संवेदनाएं तथा वर्ग संघर्ष को वे अपनी कविता में व्यक्त करते हैं। ''अपने यायावरी जीवन में भटकते हुए जिस प्रकार राहुल सांकृत्यायन ने अपने दर्शन एवं साहित्य को रचा है, उसी तरह सम्पूर्ण देश में भटकते हुए, इस पूर्व के यात्री नामधारी कवि ने अपनी काव्य-संसार का सृजन किया है।''[2]

नागार्जुन ने केवल कविता लिखी नहीं बल्कि इस सामाजिक मूल्यों के बीच कविता को उन्होंने जिया है। इस कविता में जीने के लिए अनेक सफर उन्होंने किये हैं। कलकत्ता, दिल्ली, पटना, इलाहाबाद, भोपाल, श्रीलंका आदि जगहों पर घूमकर नागार्जुन ने कवित जीने की कोशिश की है। जनता की भाषा को अपने काव्य में स्थान देकर प्रगतिशीलता को उन्होंने ग्रहण किया है। सामाजिक मूल्यों के प्रति कवि सदैव जागृत रहे हैं।

प्रवास के दौरान कवि जन-भावना का ही प्रतिनिधित्व करते है। अपनी लम्बी यात्राओं में भी कवि निम्न वर्ग तथा जनसाधारण को हमेशा याद रखते और उन पर लिखते हैं। प्राकृतिक निकटता में भी वे कवि को भूले नहीं हैं, बल्कि प्रकृति और मनुश्य के बीच भी जीवंत सम्बन्धों को स्थापित करते हैं। जहां-कहीं भी इनका प्रवास होता वहां के परिवेश में वे पूरी तरह से घुल-मिल जाती हैं।

''काश ! झोपड़ियों वाली इसकी बस्ती तक
पहुंच पाते अपन
रातों वाली अड्डेबाजी में साथ देते इसका
साखू के पत्तों वाले दोनों में साथ-साथ पीते सल्फी
चखने भुना हीआ गोश्त सुअर का साथ-साथ
फिर शायद खुलकर बातें करता यह हमसे...।''[3]

नागार्जुन केवल नाम के प्रवासी नहीं है, या मन-बहलाव इसका उद्देश्य नहीं है। उनकी यायावरी में संवेदनशीलता और जीवनानुभव को निकटता अत्यन्त गहरे रूप में देखने को मिलती है। अंतरंगता औ निष्ठा के साथ उनकी काव्यभिव्यक्ति होती है। उनकी यायावरी समाज के साथ जुड़ी हुई है। उसमें प्रकृति-वर्णन एवं सौंदर्य को भी कवि ने उसी निष्ठा के साथ अभिव्यक्त किया है।।

''ऊदे-ऊदे बदलों ने दिया है घेरा
मुश्किल है अड्डे से निकलना मेरा
कभी मूसल-धार, कभी रिमझिम
कभी टिप-टिप, कभी फुहारें, कभी झीसियां
कभी बरफ की-सी ...हीरे के चूरन की-सी महीन कनियां।''[14]

यह प्रवासी कवि समाज के साथ जुड़ा हुआ था, इसलिए केवल प्रकृति-चित्रण के महीम सौंदर्य का अकन इन कविताओं में नहीं हुआ है, बल्कि जन-जीवन की त्रासदी और कुण्ठा को वे कभी अनदेशा नहीं करते है। नागार्जुन एक ऐसे यायावर थे जिनमें देश-प्रेम जनप्रेम, परिवार, समाज के प्रति अभिन्नता थी। इसीलिए अपने प्रवास काल के दौरान आप्त स्वकीयों को भूलते नहीं हैं।

''याद आते स्वजन
जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आंख
स्मृति विहंगम को कभी थकने न देंगी पांख
याद आता मुझे अपना वह तरअनी ग्राम
याद आती लीचियाँ वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रुचिर भू-भाग।''[15]

प्रवास-काल में नागार्जुन ने नये-नये विषयों को छुआ साथ ही विविध देशों के प्राकृतिक सौन्दर्य और वहां की आंचलिकता से भी वे प्रभावित हुए हैं। इस घुमक्कड़ी के कारण उन्हें केवल प्रेरणा ही नहीं मिलती बल्कि अदम्य ऊर्जा-शक्ति भी मिलती है। लंका प्रवास के समय में लंका की सम-समाज पार्टी के विप्लवी नेताओं से उनका मिलना-जुलना शुरू हुआ था। यहीं पर वे साम्यवाद से प्रभावित होने लगे। ''नागार्जुन स्वयं निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्में ओर अभावों पले थे। इसलिए शैशव के जनवादी संस्कार पहले ही उनके- हाथ में सशक्त रूप में विद्यमान थे। अत: नागार्जु को सिंहल-प्रवास ने वामपंथ की ओर आकृष्ट किया।''[16]

नागार्जुन अपने प्रवास काल के दौरान नये-नये अनुभवों को ग्रहण करते हैं और उनकी अभिव्यक्ति अपनी कविताओं के माध्यम से करते हैं। बस यात्रा का ही सुन्दर वर्णन कवि ने किया है-

''प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता हे।
सामने गीयर से ऊपर
हुक से लटका रखी है
कांच की चूड़ियां गुलाबी
बस की रफ्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं...।''[17]

नागार्जुन की यायावरी उन्हें लोक-जीवन और लोक-संस्कृति से जोड़े रखती है। उनका जनमानस के प्रति लगाव एक व्यापक मानवीय रागात्मकता को व्यक्त करता है। उनकी घुमक्कड़ी मात्र मन-बहलाव नहीं था। इसीलिए प्रवास-दौरान महानगर की समस्य से व्यथित यायावर कहता है, ''क्या समझते हो कि तीन साल बाद मैं यहां झख मारने आया हूं। महानगर की गोद में तिलमिलाते हुए सौ-सौ ग्रामीण अंचल डुबके पड़े हैं। हमें आधे भारत में फैले हुए भूमिहीन खेत-मजदूरों और परम दरिद्र खेतिहारों का विश्वरूप दर्शन यहीं आकर होता है।''[18]

कवि आश्चर्यजनक रूप में अनेक स्थानों से प्रेरणाएं ग्रहण करते हैं। उनकी रचना-यात्रा में भौगोलिक यात्राएं भी महत्व रखती हैं। गर्मी के दिनों में राहुलजी के साथ कवि हिमालय यात्रा में जाते हैं, तो वहां के प्राकृतिक सौंदर्य में खो जाते हैं। पहाड़, नदियां, पेड़-पौधे को आकृष्ट करते हैं। नीरव क्षणों में गंगा के किनारे जाकर कवि गुनगुनाने लगते हैं-

''सित हुकूल सम फेनपुंज से प्रावृत्त तव श्यामल काया
दूर देश से मेरे मन को खींच यहां नर ले लाया
समा रहे हैं तेरी कल-कल ध्वनि में शत-शत मनहर छन्द
बैठा हूं कृष्ण शिला पर खोल कान आंख कर बन्द।''[19]

कवि का यात्री मन हमेशा उन्हें बुलाता रहा। मैथिली में लिखते हुएयात्री नाम धारण करना बड़ा ही। चरितार्थ लगता है। कभी-कभी उनकी यह यात्राएं बड़ी ही लम्बी होती थी। महीनों और सालों तक अपेन परिवार से दूर रहना पड़ता था। अपने बच्चों को लिखी चिट्ठियों के कुछ अंशों से हमें उनकी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति अनुमान हो जाता है- ''मैं कल उज्जैन के लिए प्रस्थान करने वाला हूँ''[20] को निश्चित ही दिल्ली पहुंचने रहा हूं, ''कल शाम को भोपाल से लौटें'', मैं कल हापुड जाने वाला हूँ।

नागार्जुन की यायावरी उस पथिक के समान है जो अथक है। इस प्रवास में वे कभी थकते और हारते नहीं थे। उनकी इसी यायावरी के सम्बन्ध में डॉ. चन्द्रहास सिंह लिखते हैं, ''वे हिमालय में जा रहे हो या दक्षिण भारत में, समुद्र के आस-पास, मैदानी गांवों में, शहरी कारखानों में या राजनीति की दुनिया में कहीं भी उनकी कविता हमारा साथ नहीं छोड़ती।''[21]

ग्रामीण अंचल की प्रेरणा उनके जीवन का एक अंग थी। उनका व्यक्तित्व लापरवाह, फक्कड़ और मस्तमौला है परन्तु अपने प्रति ! समाज के प्रति नहीं। असल में उनकी यात्राएं राष्ट्रीय स्वतंत्रता को महत्व देते हुए स्वाधीन भारत की अलख जगाने के लिए की थी।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि यायावरी के कारण नागार्जुन के काव्य में अनुभवों की विविधता और मानवीय संवेदना की गहराई दिखाई देती है। सन् 1911 में मंजिल की तलाश में निकला यह प्रवासी 1998 में अंतिम प्रवास के लिए चलागया।

संदर्भ

1. सं. शोभाकान्त मिश्र, नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएं (भाग 3), पृ. 197
2. डॉ. प्रभा दीक्षित, मुक्तिबोध एवं नागार्जुन का काव्य-दर्शन, पृ. 141
3. सं. शोभाकान्त मिश्र, नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएं (भाग 2), पृ. 200
4. नागार्जुन, तुमने कहा था, पृ. 92
5. नागार्जुन, सतरंगे पंखों वाली, 49
6. बाबूराम गुप्त, उपन्यासकार नागार्जुन, पृ. 7
8. प्रभाकर माचवे, प्रतिनिधि कविता संकलन, पृ. 57
9. सं. शोभाकान्त मिश्र, नागार्जुन : चुन हुई रचनाएं (भाग 3), पृ. 202
10. डॉ. चन्द्रहासस सिंह, नागार्जुन का काव्य, पृ. 101

महिला महाविद्यालय,
तहसील गेवराई, जि. बीड-431122 (महाराष्ट्र)

डॉ.

जन्म : 10 न

शिक्षा : एम.ए

अकादमिक उ

1. चार आलं
   पुस्तकें प्रक
2. विभिन्न र
   संगोष्ठियों
3. विभिन्न पत्र
   लेख प्रकाि
4. आकाशवा
5. अंतरराष्ट्रीय
   विमर्श' में र
6. मॉरीशस,
   साहित्यिक

संप्रति : एसोसि
हिंदी विभाग, श्री
महाविद्यालय, अ

₹

ISBN : 9

41. सुदर्शन प्रियदर्शिनी कृत ''न भेज्यो बिदेस'' उपन्यास में स्त्रीवादी विमर्श 251
शीतल परमार

42. प्रवासी हिन्दी रचनाकार और उनका रचना कर्म 256
डॉ. राजमुनि

43. प्रवासी हिन्दी साहित्य : अवधारणा, स्वरूप एवं प्रवासी हिन्दी लेखिकाओं की भूमिका 262
भावना गोयल

44. प्रवासी हिन्दी साहित्य : अवधारणा और स्वरूप 271
रीता वर्मा

45. अमेरिका प्रवासी हिंदी साहित्य में परिवेश बोध 275
जसराम

46. अमेरिका के वान ओल्फन का हिन्दी में योगदान 279
डॉ. वन्दना गर्ग

47. सुदर्शन प्रियदर्शिनी कृत अखबार वाला कहानी में स्त्रीवादी चिंतन 284
ममता

48. प्रवासी हिंदी साहित्य : विविध शैलियाँ 287
विनोद कुमार

49. अमेरिकी प्रवासी साहित्यकारों का रचनाकर्म 292
वन्दना देवी

50. नागार्जुन के यात्री मन से उपजी संवेदनशील प्रवासी कविता 296
प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव

51. उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी संवेदना (शेष यात्रा उपन्यास के विशेष संदर्भ में) 301
मोनिका सिंह